B.A (HONOURS) PART – 2

PHILOSOPHY – PAPER 4

Dr. Sachidanand Prasad **Dr.Raj Narayan Singh**

Department of philosophy

R.R.S College, Mokama

Patliputra University, Patna

देकार्त और स्पिनोजा का द्रव्य विचार

- पाश्चात्य दर्शन में द्रव्य विचार एक महत्वपूर्ण अवधारणा है । द्रव्य का अर्थ वह मौलिक सत्ता है, जो समस्त जगत का मूल कारण या आधार हो। प्रत्येक दार्शनिक इस पर विचार करतें हैं।

देकार्त का द्रव्य विचार :-

- देकार्त के अनुसार द्रव्य वह है,जिसकी स्वतन्त्र सत्ता है,जिसका अस्तित्व किसी दुसरे पर आधारित न हो।
- देकार्त द्रव्य को कारण रूप मानते हैं।
- कारण रूप का अर्थ है परम कारण, अर्थात स्वयं अकारण।

- देकार्त्त के अनुसार द्रव्य के दो प्रकार हैं-

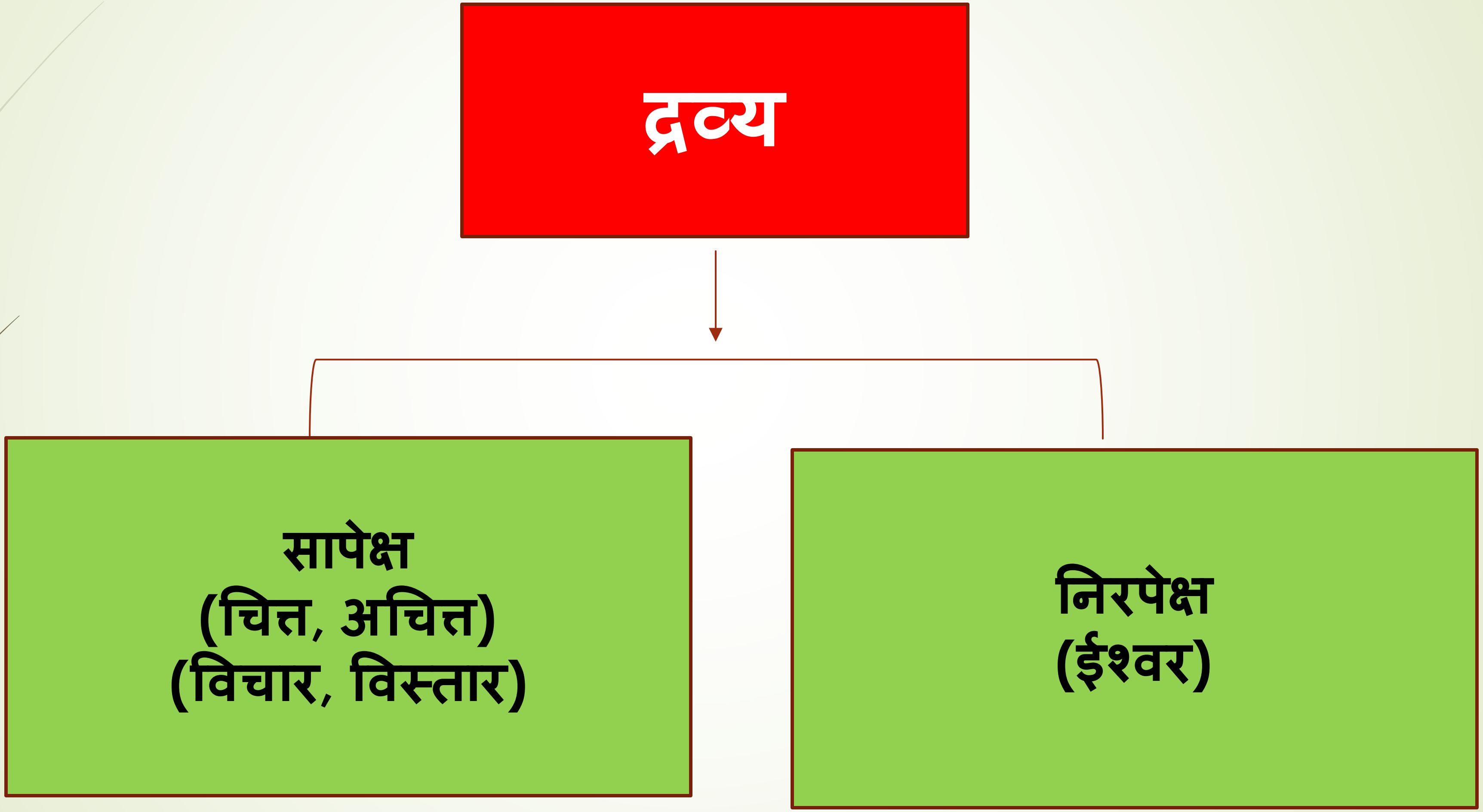

- ईश्वर ही केवल निरपेक्ष द्रव्य है।
- चित्त और अचित्त सापेक्ष द्रव्य है।
- चित्त का गुण विचार और अचित्त का गुण विस्तार है।
- इस प्रकार देकार्त्त के अनुसार तीन द्रव्य हो जाते हैं-

  चित्त,अचित्त और ईश्वर
- चित्त और अचित्त परस्पर स्वतन्त्र हैं, परंतु ईश्वर के परतन्त्र हैं।

स्पिनोजा के द्रव्य विचार:-

- स्पिनोजा भी देकार्त्त की ही द्रव्य परिभाषा को पूणर्त: स्वीकार करता है।
- स्पिनोजा का मत है कि यदि द्रव्य स्वतंत्र है तो केवल एक ही हो सकता है, तीन नहीं
  (जैसा देकार्त्त मानते हैं।)
- स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य केवल एक है- ईश्वर। यही परम द्रव्य है।
- स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य स्वतंत्र है, स्वतंत्र का अर्थ है कि द्रव्य सबका आधार होते हुए भी स्वयं निराधार है।

स्पिनोजा और देकार्त के द्रव्य में तुलना :-

- देकार्त के अनुसार द्रव्य दो हैं –

  सापेक्ष (चित्त, अचित्त) और निरपेक्ष।

  जबकि स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य केवल एक है और वह है ईश्वर।
- देकार्त चित्त और अचित्त को भी द्रव्य मानता है। जबकि स्पिनोजा चित्त और अचित्त को ईश्वर का गुण (स्वरूप)।

****